दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 9792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 26.08.2020

समाचार स्वरूप प्रकाशनार्थ

चीन से गलबहियाँ करने वाले का गला कट जाता है-प्रो.रजनीश कुमार शुक्ल

गोरखपुर 26 अगस्त 2020। भारत अकेला ऐसा देश नहीं है जिसके साथ चीन का सीमा विवाद है, बल्कि 23 देशों के साथ उसका यह विवाद है। यदि चीन ने तिब्बत पर कब्जा नहीं किया होता तो चीन व भारत के बीच युद्ध जैसी स्थिति की कोई संभावना नहीं होती। सन 1913 के बाद तिब्बत के समस्त वैदेशिक संबंध केवल और केवल भारत के माध्यम से ही आगे बढ़े हैं। चीन साम्राज्यवाद के विस्तार की लालसा से चीन की सीमा से जुड़े 13 राज्यों से उसके संबंध समाप्त हो गए। सन 1954 में ही हमने पंचशील संधि की थी और उसमें कहा गया की हम एक दूसरे राज्य की सीमाओं का सम्मान करेंगे। तिब्बत और भारत की सीमाओं के बीच चीन कहीं नहीं था। तिब्बत पर बर्बरता पूर्वक कब्जा किया गया और दलाई लामा को लासा छोड़कर भारत आना पड़ा। हमने तब भी तिब्बत को स्वतंत्र सत्ता के रूप में माना होता तो भी ठीक होता परंतु हिंदी चीनी भाई भाई के पंचशील समझौते के कारण स्थिति खराब हुई है। उक्त बातें युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजय नाथ जी महाराज की 51वीं पुण्यतिथि व राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन अवेद्यनाथ जी महाराज छठवीं पुण्यतिथि के अवसर पर दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय व्याख्यानमाला के सप्तम व अंतिम दिवस पर 'राज्य हड़प नीति– डलहौजी से चीन तक 'विषय पर मुख्य वक्ता प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल, कुलपति, महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा ने व्यक्त किया ।

उन्होंने आगे कहा कि चीन की पूरी योजना राज्य हड़प नीति की है। उसकी रणनीति है साम्राज्यवाद के साथ–साथ संसाधनों पर भी कब्जा करना। चीन का सड़क से, रेल मार्ग से व समुद्र से जोड़ने का लक्ष्य है। समुद्री क्षेत्र में चीन कमजोर था इसलिए सड़क से जोड़ने पर बल दिया, जिस पर भारत ने अपनी कड़ी आपत्ति जताई है। सन 1962 के युद्ध के बाद चीन ने सिक्किम की सीमा पर भी आंख उठाकर देखने की हिमाकत की थी। आर्थिक संसाधनों का विकास करके चीन ने तिब्बत पर कब्जा कर लिया। यदि समुद्र पर चीन की ताकत बढ़ जाती है तो वह नेपाल पर भी कब्जा कर लेगा। चीन को पता है कि दुनिया को आर्थिक आधार पर ही बांटा जा सकता है। इसी नीति पर चीन ने श्रीलंका तथा म्यांमार आदि देशों को कर्ज बांट रहा है। चीन से गलबहियाँ करने वाले का गला कट जाता है, जो वायरस के प्रसार के रूप में भी दिखाई दे रहा है। तिब्बत किसी भी रूप में आर्थिक कारणों से चीन पर आश्रित नहीं था। पाकिस्तान चीन के गिरफ्त में है। वर्मा व श्रीलंका चीन के कर्ज में डूबे हुए हैं। प्रशांत महासागर के तमाम उपमहाद्वीपों पर चीन के कब्जे हो गए हैं। यदि भारत का बाजार बंद हो जाता है तो भारत के आजादी की गारंटी हो जाती है। चीन का सारा जोर नेपाल को अपने पक्ष में लेना है पर यदि नेपाल बचेगा तभी भूटान के भी बचे रहने की संभावना है। ऐसी स्थिति में भारत के बुद्धिजीवियों को चीन की रणनीति को समझना होगा तभी हम उस खतरे को समझ पाएंगे और अपनी संरक्षा व सुरक्षा कर सकेंगे।

स्वागत एवं प्रस्ताविकी डॉ. पवन कुमार पाण्डेय ने किया एवं आभार ज्ञापन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने तथा संचालन डॉ.सुभाष चन्द्र ने किया। कार्यक्रम में तकनीकी सहयोग डॉ. अमरनाथ तिवारी व ने दिया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. राजशरण शाही ने किया।

उक्त कार्यक्रम में महाविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी व विद्यार्थियों सहित अन्य महाविद्यालयों के शिक्षक व सम्मानित प्रबुध्द जनों ने सहभाग किया।

डॉ.(शैलेश कुमार सिंह)
प्रभारी,सूचना एवं जनसम्पर्क